अच्छी पाठ्य-पुस्तकों की विशेषताएं

1. मुख पृष्ठ सचित्र, आकर्षक एवं सोद्देश्य हो।
2. मुद्रण स्वच्छ, शुद्ध एवं स्पष्ट हो।
3. आकार सुविधाजनक।
4. अध्यायों के आकार बालकों के स्तर एवं क्षमताओं के अनुरूप।
5. विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण शिक्षण उद्देश्यों एवं मूल्यों के अनुरूप।
6. विषय-वस्तु से सम्बन्धित आधुनिकतम घटनाओं, तथ्यों एवं समस्याओं पर बल।
7. विषय-वस्तु के अनुकूल चित्रों, मानचित्रों, रेखाचित्रों आदि का प्रस्तुतीकरण।
8. विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण बालकों के मानसिक स्तर के अनुरूप।
9. विषय-वस्तु का संगठन तार्किक एवं मनोवैज्ञानिक।
10. व्याख्या, स्पष्टीकरण, उदाहरणों आदि की सहायता से विषय का सरलीकरण।
11. भाषा-शैली में सरलता, स्पष्टता, मौलिकता एवं प्रवाहशीलता।
12. विद्यार्थियों में स्वयं पढ़ने की रुचि विकसित कर सकने की क्षमता।
13. अन्य लेखकों, विद्वानों के सन्दर्भ स्पष्ट, विश्वसनीय एवं वैध हो।
14. विषय-सूची, शब्दावली, सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची, निर्देश-नियमावली आदि का समावेश।
15. चिन्तन एवं नवीन विचारों का प्रस्तुतीकरण।
16. विषय-वस्तु से किसी की भी भावनाओं को आघात न पहुँचाना अर्थात् धर्म निरपेक्षता की भावना पर ध्यान।
17. अध्याय के अन्त में विद्यार्थियों द्वारा स्वतः मूल्यांकन हेतु अभ्यास-प्रश्नों का समावेश।

Scanned by CamScanner

पाठ्य पुस्तकों से सम्बन्धित सुझाव

ये सुझाव निम्नलिखित हैं–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर एक पाठ्य-पुस्तक के स्थान अच्छे स्तर की कई पुस्तकों रचना हो।
2. अनुभवी लेखकों को सरकार द्वारा पाठ्य-पुस्तक के निर्माण हेतु प्रोत्साहित किया जाये।
3. पाठ्य-पुस्तक को प्रकाशित करने से पूर्व उसकी पाण्डुलिपि का अध्ययन विषय-विशेषज्ञों की समिति द्वारा कराया जाए।
4. सुधार हेतु राष्ट्रीय स्तर पर एक पाठ्य-पुस्तक समिति का गठन किया जाये जो समय-समय पर उनमें गुणात्मक सुधार हेतु लेखकों एवं प्रकाशकों को उपयुक्त परामर्श देती रहे।
5. विषय-वस्तु किसी सम्प्रदाय या वर्ग विशेष की भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाली नहीं होनी चाहिए।
6. निर्माण एवं चयन में व्यक्तिगत, वर्गगत एवं राजनीतिक हस्तक्षेप स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए।
7. आवश्यकतानुसार चित्र, मानचित्र, चार्ट, ग्राफ, आँकड़ों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
8. पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण हेतु राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर अनुभवी एवं योग्य लेखकों की गोष्ठियों एवं सम्मेलन आयोजित किये जाने चाहिए।
9. मूल्यों पर सरकार द्वारा नियन्त्रण रखा जाना चाहिए तथा मूल्य कम रखने के लिए प्रकाशकों को सहायता अनुदान दिया जाना चाहिए।
10. पाठ्य-पुस्तकों की रचना पाठ्यक्रम के उद्देश्यों के अनुरूप की जानी चाहिए।
11. पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण होना चाहिए जिससे अच्छी पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित हो सकें।
12. मौलिक रूप से रचना करने वाले लेखकों को ही पाठ्य-पुस्तकों को लिखने का अधिकार हो।
13. पाठ्यक्रमों में बहुत जल्दी-जल्दी परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि इससे अच्छी पुस्तकों की रचना नहीं हो पाती।
14. पाठ्य-पुस्तकों की रचना में पूर्ण रूप से राष्ट्रीयता की छाप होनी चाहिए।
15. पाठ्य-पुस्तकों को मात्र परीक्षा की दृष्टि से ही न लिखा जाये, क्योंकि इससे विषयवस्तु की रूपरेखा संकुचित हो जाती है तथा अनेक व्यावहारिक पक्षों की उपेक्षा हो जाती है।
16. प्रकाशकों को कागज सस्ते दामों में उपलब्ध कराया जाय।

Scanned by CamScanner